चन्द्रावती चंदन

चन्द्रावती चंदन विकास काल के एगो ससक्त हस्ताक्षर हथ। इनकर जनम पटना जिला के बिक्रम थाना के बेनीबिगहा गाँव में 22 जनवनरी 1968 में भेल हल। इनकर पिता के नाम रामदास आर्य आ माता के नाम चिन्तामणि देवी हे। इनकर प्रारम्भिक सिच्छा गाँव में ही भेल। 1983 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होके बी०ए० प्रतिष्ठा (इतिहास) मुहंथ महादेवानंद महिला महाविद्यालय आरा, भोजपुर से कइलन आ एम० ए० (इतिहास) एच० डी० जैन कॉलेज आरा, भोजपुर से पास कइलन। ई मगही में भी एम.ए. हथ। प्रयाग संगीत समिति से संगीत में सीनियर डिप्लोमा भी कइले हथ। साक्षरता गीत कैसेट 'जन्म दिया तो शिक्षा दो आउ भोजपुरी देवी गीत **'माई तोहरे चरन सुखदाई'** कैसेट में मुख्य गायिका के रूप में गीत गयलन हे।

साहित्य के प्रति बचपन से ही इनका लगाव हल। जब ई अठवाँ क्लास में पढ़ऽ हलन तबहिए से कविता लिखऽ हलन आ स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुनावऽ हलन। आकाशवाणी पटना से कई बार कविता पाठ भी कइलन। आकाशवाणी पटना में **'मागधी'** प्रोग्राम में कम्पीयर के रूप में कार्य कइलन। मगही पत्रिका **'अलका मागधी'** में इनकर कविता, लेख छपइत रहऽ हे। साठी में भी इनकर कविता छपल हे। एकरा अलावे विभिन्न पत्र-पत्रिका में इनकर कविता, कहानी आ लेख छपइत रहऽ हे। सहार, भोजपुर के अन्हारी पंचायत से चुनाव में जीत के पंचायत समिति सदस्य के रूप में भी पाँच साल तक जनता के सेवा कइलन।

इनकर कविता में जीवन के सच्चाई होवऽ हे। इनकर कविता बनावटीपन से दूर जे अदमी अप्पन जीवन में संघर्स, दरद, टीस, वेदना, कसक के महसूस करऽ हे ओही इनकर कविता के सच्चाई हे। इनकर छायावादी कविता में प्रकृति के मानवीकरण के साथ-साथ जीवन के यथार्थ के पुट दिखाई पड़ऽ हे।

हिन्दी मगही, भोजपुरी में इनकर प्रमुख रचना हे जे अपरकासित हे—

(क) कल्पना—कविता संगरह ।

(ख) अतीत की याद—कहानी संगरह ।

(ग) टूटल तार (मगही एकांकी संगरह) ।

(घ) बसंती बेयर—लोकगीत संगरह ।

(ङ) बिखरल मोती—मगही कविता संगरह ।

अभी ई रजा हई स्कूल अनीसाबाद, पटना में अध्यापन कार्य करइत साहित्य सेवा में जुड़ल हथ।

'कलम' सीर्सक कविता यथार्थवादी कविता हे । ई कविता के जरिए कवयित्री जीवन के ऊ सच्चाई से रूबरू करावेला चाहलन हे जेकरा से अदमी अनजान बनल हे । गुलाब के फूल के हँसइत तो सब कोई देखऽ हे बाकि ओकर काँटा के चुभन के महसूस कोई न करे । मंदिर में मन के भरम मिटावेला देवी दुर्गा के पूजा तो करऽ हथ लोग बाकि घर के लक्ष्मी अँगना में कुँहकऽ हे, छछनऽ हे, फिर ई कइसन देवी-दुर्गा के पूजा हे ? अपना-अपना तो सब कहऽ हथ। रिस्तेदार के रूप में अँगुरी पर गिनवावऽ हथ बाकि जब दुख पड़ऽ हे तो अपना भी सपना हो जा हथ। ई कविता में उहे अनकहल, अनछुवल, अनसहल आ अनबूझल पीड़ा के कवयित्री अप्पन 'कलम' कविता के माध्यम से व्यक्त कइलन हे।

कलम

ए कलम कुछ गावऽ
जिनगी के गीत सुनावऽ

अब तक कहलऽ
बहइत नदिया के,
किलकित छलकित धारा के,
चिक्कन-चाकन, सजल-सँवरल
हँसइत कनिया धरती के,
गिरि से झरइत झरना के,
आह—कराह बतावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

सांत देखइलऽ सागर धरती,
आसमान चुप बादर,
सांत देखइलऽ चंदा-सूरज
सांत देखइलऽ काजर

तनी देखावऽ लहर सगरवा,
बदरा के गरज सुनावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

दूध-गंगा जल फूल से लदल
देखली देवी मंदिल में,
लछमी के रोवइत देखली
अपने घर के अंदर में,
दिन में सुतल उलुआ के
ठोकर देके जगावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

बहुत सुनइलऽ बाग बहार के,
बिहँसइत कमल कींचड़ के,
बाकि काँटा पर गुलाब के
टीस जरी बतावऽ,
ए कलम कुछ गाबऽ,
जिनगी के गीत सुनावऽ

अप्पन धरती अप्पन सबके
पियार-दुलार-ममता के,
गइया गोदी बाछी के,
अपनापन के ढोल पिटवयलऽ,

अँगुरी पर गिनवयलऽ
बाकि चोट मिलल ममता के
आके धीरज बँधावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

आगे गहिरा नदिया मिलल,
पीछे आग-समुन्दर,
बीच टीला पर खड़ा हे अदमी,
हाल हे साँप छुछुन्दर के,
अँगुरी धर के पार करावऽ,
आके राज देखावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

बाहर भीड़ कत्ते अदमी के,
गूँजे गीत हँसी के सोता,
भीतर झाँकऽ हर अदमी के
जिनगी उजड़ल खोंता,
सहेज-सहेज के एक-एक तिनका
सुन्नर घर बनावऽ,
ए कलम कुछ गावऽ

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कवयित्री कलम से का करेला कह रहल हे ?

   (ख) 'अब तक कहलऽ बहइत नदिया के' से का मतलब निकलऽ हे ?

   (ग) कवयित्री बदरा से गरज सुनावेला कउन मतलब से कह रहल हे ?

   (घ) बादर आउ काजर के प्रयोग कउन अरथ में कयल गेल हे ?

   (ङ) काँटा पर गुलाब के अरथ बतावऽ ।

लिखित :

1. कवयित्री चन्द्रावती चंदन के परिचय पाँच वाक्य में लिखऽ।
2. कवयित्री कलम से जिनगी के गीत सुनावेला काहे कह रहल हे ? दस वाक्य में लिखऽ।
3. आज के पहिले कलम जे काम कयलक हल, ओकरा में चार गो काम बतावऽ ?
4. नीचे लिखल पंक्ति के आसय लिखऽ :—

   (क) अब तक कहलऽ
   बहइत नदिया के/
   किलकित छलकित धारा के/
   चिक्कन-चाकन, सजल सँवरल
   हँसइत कनिया धरती के/
   गिरि से झरइत झरना के/
   आह कराह बतावऽ

5. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :—

   (क) भीतर झाँकऽ हर अदमी के सहेज-सहेज के एक-एक तिनका सुन्नर घर बनावऽ।

   (ख) भीतर झाँकऽ हर अदमी के
   जिनगी उजड़ल खोंता
   सहेज-सहेज एक-एक तिनका
   सुन्नर घर बनावऽ

भासा-अध्ययन

1. कविता में जउन बिम्ब आउ प्रतीमान आयल हे, ओकरा बतावऽ (आठ वाक्य में)
2. ''अँगुरी धर के पार करावऽ'' कवयित्री अइसे काहे कह रहल हे ?
3. 'हाल हे साँप छुछन्दर के' के मतलब का हे

योग्यता-विस्तार :

1. (क) कलम पर लिखल दू गो कविता खोज के लिखऽ, आउ कक्षा में सुनावऽ।

(ख) तोर विचार से कलम के दोसर आउ कउन भूमिका हो सकऽ हे ?

(ग) तोर विचार से कविता के भाव 'सत्यं सिवं सुन्दरं' के केतना नजदीक हे ?

(घ) 'कलम' कविता कउन तरह के हे ?

(i) प्रगतिवादी (ii) प्रयोगवादी (iii) छायावादी (iv) समकालीन ।

(ङ) कविता में आयल सबद के चुनाव केतना सही हे ?

सब्दार्थ :

जिनगी	—	जीवन
नदिया	—	नदी
किलकित	—	कलकल करित
गिरि	—	पहाड़
कराह	—	कुहरना
आह	—	कसक
टीस	—	दरद
पियार	—	प्रेम
गहिरा	—	गहरा
सोता	—	स्रोत ।

•••

पाठ्यक्रम

1. भासा कौसल के विकास करना, जइसे सुनना, बोलना पढ़ना आउ लिखना। पाठ्यक्रम के ई उद्देस्य हे कि पढ़ेवला के सर्जनात्मक साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक क्षमता के विकास हो सके। विद्यार्थी स्वतंत्र आउ मौखिक रूप से अप्पन विचार के अभिव्यक्त कर सके, अइसन क्षमता के विकास करना, साथ ही रास्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भासा आदि के प्रति संवेदनसील आउ सकारात्मक दृस्टि के विकास करना।
2. छात्र के ज्ञान के छेत्र के विस्तार करना, ताकि ऊ अखबार में आवेवला व्यक्ति, परिवेस, समाज, संस्कृति आदि के जानकारी रख सके।
3. छात्र में मानसिक दक्षता आउ कौसल के अइसन विकास करना कि ऊ वाद-विवाद, चर्चा, भासन आदि में समर्थ प्रतिभागिता के प्रमाण दे सके। ओकर मानसिक-बौद्धिक गुन के विकास करके व्यक्तित्व के सम्पन्न बनाना।
4. मगही भासा आउ साहित्य के पढ़ाई के जरिये भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के समझना आउ ओकर अच्छाई के आत्मसात करे के समझ पैदा करना, जइसे जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव के दूर करना आउ धरम सम्प्रदाय के प्रति कट्टरता दूर करके मन में सहिस्णुता, सद्भाव, उदारता आउ सहज अपनापन के भाव उत्पन्न करना।
5. विद्यार्थी में अइसन मानसिक-बौद्धिक क्षमता के विकास करना, ताकि ऊ अप्पन उत्तरदायित्व समझ सके आउ पाठ्य-पुस्तक के अलावे अन्य तरीका अपना के अप्पन मनचाहा ज्ञान, समझ, दृस्टिकोण, अभिरूचि, संस्कार के सँवारे आउ बढ़ावे में सफल हो सके। सम्वादी चेतना के जादे से जादे विकास करना।
6. आधुनिक समाज के विविध सरोकार के प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति करे के कौसल के विकास करना, जइसे पर्यावरण, परिवेस, संवैधानिक दायित्व, लोक-संस्कृति, व्यापार-वाणिज्य, विविध व्यवसाय, बाजार-सिनेमा, खेल जगत, नाटक, नृत्य-संगीत, उद्योग-धंधा, खेती, मिडिया, विज्ञान जगत, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि।
7. नवमा-दसमा वर्ग में अइसन कोसिस कइल गेल हे कि विद्यार्थी साहित्य के सब्भे विधा से परिचित हो जाय। ओही कौसल के आगे विकास के प्रयास करना।
8. मौलिकता, कल्पना, सृजनात्मकता आउ सौन्दर्यप्रियता के भावना के विकास क ।

9. इगरहवाँ वर्ग के बच्चा किसोरावस्था में आ जाहे, ई लेल किसोर मनोविज्ञान के ध्यान में रख के ओकर मनोवैज्ञानिक जिज्ञासा के पूर्ति करना।

10. भासा-साहित्य के अध्ययन से छात्र के मनोभाव के उदात्त बनाना आउ ओकरा में सद्‌वृत्ति के विकास करके चरित्र-निर्माण करना।

11. ई वर्ग के छात्र में समझदारी के विकास हो जाहे। ई लेल छात्र के अन्दर रास्ट्रीय-एकता, रास्ट्र-गौरव आउ संस्कृति के प्रति अनुराग के विकास करना।

12. आज संचार तकनीक बहुत आगे बढ़ चुकल हे। ई लेल संचार माध्यम में प्रयुक्त मगही के प्रकृति से अवगत कराना, नया-नया तरीका से प्रयोग करे के क्षमता के विकास करना।

13. विदेसी भासा के साथ-साथ गैर मगही भारतीय भासा के संस्कृति से परिचय कराना।

14. दैनिक आउ बेयोहारिक जिनगी में तरह-तरह के तरीका से अभिव्यक्ति के व्यक्त करे के क्षमता के विकास करना, चाहे ऊ मौखिक होवे इया लिखित।

15. किसोर उमर के अनुसार विस्लेसन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आउ तर्क-क्षमता के विकास करना।

16. छात्र में भासा के समावेस आउ बहुभासी प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक दृस्टिकोण के व्यापक विकास करना।

17. किसोर उमर में सारीरिक आउ मानसिक रूप में कई तरह के परिवर्तन हो जाहे। ई लेल जउन भी चुनौती आवे छात्र ओकर सामना कर सके, एकरा ला ऊ अप्पन क्षमता आउ प्रतिभा के विकास करेला भासा के माध्यम बना सके।

18. किसोर उमर अयते स्व-अनुसासन के जरूरत पड़ऽ हे, जेकरा ला किसिम-किसिम के ज्ञान के अनुसासन, भासा के विमर्स के माध्यम से मगही के क्षमता के बोध कराना।

19. किसोर उमर के कारन बच्चा के मानसिक विकास कुछ ई ढंग से हो जाहे कि ओकरा में वैचारिक स्तर पर मतभेद, विरोध आउ टकराव के परिस्थिति आ जाहे। ई लेल ऊ परिस्थिति के तर्कपूर्ण आउ संवेदनसील व्यवहार से सान्तिपूर्ण संवाद के क्षमता के विकास करना।

20. भासा आउ साहित्य के मजबूती व्याकरण आउ रचना के जानकारी से होवऽ हे। ई लेल मगही व्याकरण आउ रचना के एगो अलग किताब रहत जेकरा आधार पर पाठ्य-पुस्तक के साथ-साथ बाहर के परिवेस से छात्र में भासागत कौसल के विकास होयत।

—